

चीन नहीं मानता मैकमोहन (McMahon) रेखा

संदर्भ और मुद्दा

1962 के बाद 55 वर्षों में पहली बार भारत और चीन की सेनाएँ एक महीने से अधिक समय से सकिकमि-भूटान-तबिबत सीमा पर आमने-सामने खड़ी हैं। दोनों ओर से बयानबाजी का दौर जारी है और स्थिति यहाँ तक तनावपूर्ण हो चुकी है कि चीन ने अपनी संप्रभुता की रक्षा के लिये युद्ध तक की चुनौती दे दी है। जवाब में भारत ने कहा कि वह अब 1962 वाला भारत नहीं है, तो चीन ने भी इससे मलिता-जुलता बयान जारी कर दिया। चीनी सैनिकों ने जून महीने की शुरुआत में भारतीय सेना से डोका-ला के लालटेन में 2012 में स्थापित दो बंकरों को हटाने को कहा था, जो चुंबी घाटी के पास और भारत-भूटान-तबिबत ट्राईजंक्शन के कोने में पड़ते हैं। असल विवाद तब शुरू हुआ, जब चीन की सेना ने भारत के दो बंकरों को ध्वस्त कर दिया। इसके बाद भारत ने इस इलाके में अपनी स्थिति को मज़बूत करने के लिये और अधिक सैनिकों को तैनात कर दिया। अब चीन का कहना है कि यदि भारत गतिरिध खत्म करना चाहता है तो डोका-ला से अपने सैनिक हटा ले।

आइये, प्रश्नोत्तर के माध्यम से यह जानने-समझने का प्रयास करते हैं कि आखिर मामला है क्या? विवाद ने इतना गंभीर रूप क्यों ले लिया? चीन उत्तेजक बयान देकर क्या जताना चाहता है? भारत के अमेरिका के साथ प्रगाढ़ संबंध क्या चीन को परेशान कर रहे हैं? कैसे पहले जैसी स्थिति को बहाल किया जा सकता है? इसके अलावा वर्तमान भारत-चीन विवाद पर भी कुछ प्रकाश डाला गया है।

1. कतिने देशों के साथ चीन सीमा विवाद में उलझा हुआ है?

चीन के साथ 14 देशों (भारत, पाकस्तान, अफगानस्तान, ताजकिस्तान, कर्गिस्तान, कज़ाखस्तान, मंगोलिया, रूस, उत्तर कोरिया, वियतनाम, लाओस, म्यांमार, भूटान और नेपाल) की सीमाएँ लगती हैं, जो विश्व में सबसे अधिक है; इसके अलावा रूस के साथ भी इतने ही देशों की सीमाएँ लगती हैं। अपने अधिकांश पड़ोसी देशों के साथ चीन का सीमा विवाद बराबर चलता रहता है। समय के साथ चीन ने अफगानस्तान, ताजकिस्तान, कज़ाखस्तान, म्यांमार, पाकस्तान और रूस से अपने विवाद काफी हद तक सुलझा लिये हैं। वर्तमान समय में चीन का सबसे बड़ा सीमा विवाद भारत और कुछ हद तक भूटान के साथ चल रहा है। भू-सीमा के अलावा चीन के साथ चार देशों (जापान, दक्षिण कोरिया, वियतनाम और फिलिपींस) की समुद्री सीमा भी लगती है। इन समुद्री सीमाओं को लेकर भी चीन का विवाद चलता रहता है।

2. इन विवादों का प्रमुख कारण क्या है?

वर्षिषज्ज ऐसा मानते हैं कि एशियाई देशों के बीच सीमा विवाद की जड़ों में उन पर हुआ औपनिवेशिक शासन प्रमुख कारण है। एक-जैसा अतीत या उभयनिष्ठ संस्कृति होने के बावजूद औपनिवेशिक शक्तियों ने मनमाने तरीके से कई आधुनिक देशों का निर्माण किया था। जबकि अफ्रीका, एशिया और दोनों अमेरिकी देशों के कई क्षेत्रों के बीच कठोर सीमाओं की अवधारणा कभी थी ही नहीं। इन क्षेत्रों या देशों के बीच वभिन्न जातीयताओं या संस्कृतियों के आधार पर अपेक्षाकृत लचीली (कम बाधित) सीमाएँ थीं। पूरी तरह सर्वेक्षित क्षेत्रीय राज्य का विचार एक आधुनिक पश्चिमी अवधारणा है, जो उनके उपनिवेशों पर भी थोप दी गई और कई बेमेल देश अस्तित्व में आए। इसी समयावधि में चीन को भी कई संधियों में शामिल होने के लिये मज़बूर किया गया था, जिनके बारे में उसका मानना है कि वे असमान थीं और वर्तमान विवादों में से अधिकांश इन्हीं की वजह से हैं।

3. क्या थी यह संधियाँ?

19वीं शताब्दी तथा 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में चीन को ब्रिटन, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका, रूस और जापान के साथ कई प्रकार की संधियाँ करने को मज़बूर किया गया। इनमें से अधिकांश संधियों में चीनी सरकार ने उपनिवेशवादियों को संरक्षण दिया, उन्हें व्यापार करने के लिये विशेषाधिकार दिये और कुछ इलाके भी उन्हें सौंपे। चीन ने ब्रिटन को हांगकांग, पुर्तगाल को मकाऊ, अपने उत्तरी क्षेत्र का एक बड़ा भूभाग रूस के जार को, फ्रांस को अन्नम (अब वियतनाम में) तथा जापान को ताइवान का भूभाग सौंपा था। रूसी क्रांति के बाद बने सोवियत संघ ने तो चीन को उसका इलाका लौटा दिया, लेकिन अन्य उपनिवेशवादी शक्तियों ने इसके बाद भी कई दशकों तक एशिया से जाना गवारा नहीं किया और चीन के अधिकांश सीमा विवाद इसी औपनिवेशिक काल की देन हैं।

4. भारत और चीन के बीच क्या सीमा विवाद है?

भारत मैकमोहन रेखा को मान्यता देता है और इसे स्वीकार भी करता है, लेकिन चीन इसे मान्यता नहीं देता और न ही स्वीकार करता है। यह रेखा तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार में वंदिश सचिव रहे सर हेनरी मैकमोहन ने खींची थी, जो ब्रिटन, चीन और तबिबत के बीच हुए शमिला सम्मेलन के मुख्य वार्ताकार भी थे। इस सम्मेलन में चीन के वार्ताकार इवान चैन ने कहा था कि उन्हें भारत के साथ तबिबत की सीमा पर चर्चा करने के लिये अधिकृत नहीं किया गया था। चीन की अनुपस्थिति में ब्रिटिश और तबिबतियों के बीच मैकमोहन लाइन पर चर्चा हुई थी और जब चीन ने इस पर अपनी आपत्ता जताई तो इसे भारत और तबिबत के बीच एक द्विपक्षीय समझौते के रूप में घोषित कर दिया गया था। तबिबत के दक्षिण में स्थित क्षेत्र को ब्रिटिश भारत में घोषित कर दिया गया। इससे अरुणाचल प्रदेश का तवांग क्षेत्र भारत का हिस्सा बन गया। ऐतिहासिक रूप से इस हिस्से को दक्षिण तबिबत के नाम से जाना जाता था। 1950 में तबिबत ने स्वतंत्र क्षेत्र का अपना दर्जा खो दिया और यह क्षेत्र भारत के नियंत्रण में आ गया। चीन के इस क्षेत्र पर दावे के जवाब में भारत यह तर्क देता है कि जब मैकमोहन रेखा खींची गई थी, तब तबिबत पर चीन की संप्रभुता नहीं थी। इसके अलावा, ऐतिहासिक रूप से भी अरुणाचल प्रदेश पर चीन का कोई दावा नहीं बनता। चीन ने तबिबत पर कब्जा करने के बाद ही अरुणाचल प्रदेश पर अपना दावा जताना शुरू किया। ऐतिहासिक रूप से तवांग के अहोम राजाओं और देब राजाओं के अरुणाचल की जनजातियों के साथ आर्थिक संबंध थे। ल्हासा के साथ तवांग मठ के आध्यात्मिक संबंध थे और उसका प्रभाव अस्थायी नहीं था। वैसे भी अरुणाचल प्रदेश

की जनजातियों दक्षिण को अपने अधिक नकिट मानती थीं, क्योंकि 14 हजार से 18 हजार फीट ऊँचे दर्रों के कारण तबिबत के साथ संपर्क करना बेहद कठिन था। 'सीमा' का केवल 65 से 70 कमी. क्षेत्र ऐसा था, जहाँ से नियमिति संपर्क कर पाना संभव था। कुछ वचिारकों का मत है कि इस प्रकार शमिला सम्मेलन में तबिबत ने अपना कुछ क्षेत्र ब्रिटिश भारत के हाथों गँवा दिया। इसके अलावा ह्वेनसांग जैसे प्राचीन यात्रियों ने भी अपने वृत्तान्त में स्थानीय राज्यों के प्रभाव की बात कही है। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि तबिबत पर चीन के कब्जे से पहले तबिबत के भारत के साथ संबंध कमोबेश शांतपूरण थे।

5. इन वविवादों को सुलझाने के परतचीन का क्या रवैया है?

हालाँकि चीन ने करिगसितान और ताजकिसितान जैसे देशों को क्षेत्रीय रयियतें दी हैं, लेकिन में किसी भी रूप में चीनी वर्चस्व के अधीन थे। इसके अलावा चीन लगभग हर उस संघिको नकारता है, जिसे उसने कमयुनसिट करान्ता होने से पहले मंजूरी दी थी। चीन का यह अडयिल रवैया चर्चा का वषिय है, क्योंकि किई वशिषज्ज ऐतहासिकि संदर्भ में उस तथिको नशिचति करने की बात करते हैं, जब देशों ने अपनी आधुनकि सीमाओं को परभाषति कयिा, उदाहरण के लयि, मौर्य और मुगल साम्राज्यों ने भारत की वर्तमान उत्तरी सीमाओं से काफी आगे जाकर सीमा वसितार कयिा था, जबकि चोल साम्राज्य का वसितार वयितनाम तक हुआ था। अब यद भारत भी चीन के जैसे तर्क देते हुए इन क्षेत्रों पर अपना ऐतहासिकि दावा जताने लगे तो यह कतिना व्यावहारकि होगा?

क्या है वर्तमान भारत-चीन वविवाद का कारण?

सकिक्मि की सीमा पर एक इलाका है डोका-ला, जहाँ चीन, भारत और भूटान की सीमा मलिति है। और इसी इलाके में चीन को भारत ने सड़क बनाने से रोका। इसके बाद चीनी सेना ने भारत के दो बंकर नष्ट कर दयिे और घटना के बाद से तनाव बढ़ता गया। भूटान ने भारत की मदद से चीन के सामने अपनी चतिा जाहरि की, क्योंकि चीन और भूटान के बीच राजनयकि संबंध नहीं हैं। इस बीच चीन ने भारत से उसकी सेना की गतविधियों को लेकर आधिकारकि शकियत दर्ज कराई। चीनी सैनिकों के जमावड़े के बाद भारत ने भी अपने सैनिकि डोका-ला में भेजे, जिन्हें नॉन-कामबैटवि मोड में तैनात कयिा गया है। इस मोड में सैनिकि अपनी बंदूक की नाल को ज़मीन की ओर रखते हैं।

- भारत और चीन चुंबी घाटी के इलाके में आमने-सामने हैं, जहाँ भारत-भूटान और चीन तीन देशों की सीमाएँ मलिति हैं। डोका-ला पठार चुंबी घाटी का ही हसिा है, जहाँ भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच तनाव हुआ है।
- डोका-ला पठार के केवल 10-12 कमी. पर ही चीन का शहर याडोंग है, जो हर मौसम में चालू रहने वाली सड़क से जुड़ा है। डोका-ला पठार से नाथू-ला केवल 15 कमी. दूर है।
- जून की शुरुआत में चीनी कामगारों ने याडोंग से इस इलाके में सड़क को आगे बढ़ाने की कोशशि की, जिसकी वजह से ठीक इसी इलाके में भारतीय जवानों ने उन्हें ऐसा करने से रोका।
- भूटान सरकार भी डोका-ला इलाके में चीन की मौजूदगी पर वरिोध जता चुकी है, जो कि जोम्पलरी रजि में मौजूद भूटान सेना के बेस से नकिट है।
- इस पूरे वविवाद से भारत की चतिा इस बात को लेकर है कि इस इलाके से चीन की तोपें चकिेन्स नेक (सलिंगुड़ी कॉरिडोर) नामक इस सँकरी पट्टी से काफी नकिट तक आ सकती हैं, जो उत्तर-पूरव को पूरे भारत से जोड़ती है।